Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.03, October, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

Knowledgeable Research
ISSN 2583-6633
Vol.02, No.03, October,2023
http://knowledgeableresearch.com/

रामायण की उपेक्षित पात्र : उर्मिला का मैथिलीशरण गुप्त के साकेत में वर्णन एक उत्तम पहल

डॉ. शुभ्रा माहेश्वरी
असिस्टेंट प्रोफेसर ,हिन्दी विभाग
संघटक राजकीय महाविद्यालय, सहसवान,बदायूं
Email: drshubhramaheshwari@gmail.com

****

सार:

कर्तव्य के प्रति समर्पण और सरल, शांत और विनम्र स्वभाव वाली उर्मिला एक ऐसी महिला हैं जो रामायण की सबसे बलिदानी नायिका हैं। वह अपने पति के कर्तव्य को ही अपना सब कुछ मानती हैं और 14 वर्षों तक महल में रहकर भी एक तपस्वी सन्यासिनी का जीवन जीती थीं। रवीन्द्र नाथ टैगोर और पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी जैसे कवियों ने उनके प्रति उनकी उदासीनता की ओर ध्यान आकर्षित करने की कोशिश की, लेकिन वह कवियों की नजरों से ओझल रहीं। उर्मिला और सीता के पिता महाराज जनक गृहस्थ होते हुए भी सन्यासी की तरह रहते थे और राम की खड़ाऊ को राजगद्दी पर रखते थे। जब राम राजगद्दी छोड़कर सीता और लक्ष्मण के साथ वन में चले गये तो उनकी अनुपस्थिति में अयोध्या नगरी तपोवन के समान वीरान दिखाई देने लगी। पति-वियोग की ज्वाला में जलते हुए भी वह अपने कुछ धर्म का भली-भाँति पालन करती रही, जिसके कारण कैकेयी द्वारा अनुचित वर माँगने के कारण रघुकुल की बदनामी हुई। गुप्त जी ने साकेत में उसके विरह का जो चित्रण किया है वह अत्यंत मार्मिक तथा गहरी मानवीय संवेदनाओं एवं भावनाओं से परिपूर्ण है।

संकेत शब्द : *रामायण, उर्मिला, मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्या नगरी*

****

इस धरा की अनमोल मोती है रामायण की सबसे मूक एवं गंभीर नायिका है ।त्याग के मामले में शायद रामायण में उर्मिला से अधिक त्यागमयी नारी का वर्णन नहीं हुआ है। कर्तव्य निष्ठा, वचन निभाने वाली, सरला ,निश्चल एवं सुशीला स्वभाव की नारी थी उर्मिला। रामायण में इनको यशस्विनी के विशेषण से सुशोभित किया गया है। मां जानकी ने उर्मिला को साध्वी एवं शुभदर्शना माना है ।पति के कर्तव्य को अपना सर्वस्व समझती है।पति के वचन के लिए स्वयं 14 वर्षों तक महल में रहने के उपरांत भी तपस्विनी सन्यासिनी का जीवन व्यतीत करने वाली एकमात्र नारी पात्र उर्मिला ही है।

डॉ. शुभ्रा माहेश्वरी
Received Date: 06.10.2023
Publication Date: 30.10.2023

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.03, October, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

सबसे पहले रविंद्र नाथ टैगोर और बाद में पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी ने एक निबंध लिखकर पाठकों का ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करने का प्रयास किया था कि कवियों ने उर्मिला के विषय में बड़ी उदासीनता प्रदर्शित की है ।उसकी ओर आदि कवि वाल्मीकि और महाकवि तुलसीदास सर्वदा सर्वथा उदासीन रहे हैं ।जबकि भवभूति ने चित्र वीथी में चित्र देखते हुए लक्ष्मण से सीता को यह प्रश्न करते दिखाया है कि 'इयमपराका?' अर्थात चित्र में यह दूसरी कौन है ?अपनी पत्नी के संबंध में सीता जी द्वारा यह प्रश्न किया जाता देखकर लक्ष्मण संकोचवश उस चित्र पर हाथ रख देते हैं और कहना न होगा कि तब से उर्मिला का चरित्र कवियों की दृष्टि से छिपा ही रहा है । द्विवेदी जी के योग्य शिष्य मैथिलीशरण गुप्त ने अपने काव्य गुरु की इस इच्छा की पूर्ति करते हुए 'साकेत' नामक महाकाव्य की रचना की।

उर्मिला और सीता आदि चारों बहनों के पिता महाराज जनक गृहस्थ होते हुए भी वीतरागियों की तरह रहते थे। वह राजा भी थे और योगी भी। वे अनासक्त भी थे और गृहस्थ भी ।उनके चार पुत्रियां थी सीता, मांडवी उर्मिला और श्रुतिकीर्ति ।जब राम राजसिंहासन को त्याग कर सीता और लक्ष्मण के साथ वन को चले गए तो उनके अभाव में अयोध्या नगरी तपोवन सी सुनसान प्रतीत होने लगी ।भरत स्वभ्राता राम के प्रति अनुराग के कारण राजा होकर भी राम के खड़ाऊ को सिंहासन पर रखकर योगो जैसा जीवन व्यतीत करने लगे। सीता अपने प्राणनाथ के साथ वन को चली गई थी तथा उनका वन का जीवन भी दुखद प्रतीत होने के स्थान पर नंदनवन सा सुखद प्रतीत होता था ।उर्मिला की दशा इसके सर्वथा विपरीत छोड़ दुखमयी थी क्योंकि उसे सद्य: विवाहिता को उसके पति लक्ष्मण विरह -सागर में डुबोते हुए अपने अग्रज के साथ वन चले गए थे। स्वपति की विरह-ज्वाला में दग्ध होते हुए भी उर्मिला अपने कुछ धर्म का सम्यक पालन करती रही, जिससे कैकेयी द्वारा अनुचित वर मांगने के कारण रघुकुल को कलंक लग गया था ।

लक्ष्मण के वन चले जाने पर उर्मिला उसके विरह में पागल सी हो उठी।कभी वह अपनी सुधि को भूलकर अपने प्रियतम से आने के लिए कहती थी और कभी रोते-रोते भी चौंक कर प्रीतम से वापस जाने की विनती करती हैं। इस तरह वह प्रेम और आदर्श की भावनाओं के द्वंद में फंसी रहती हैं और स्वयं को अपने पति की विरह ज्वाला में बत्ती की तरह जलाती रहती हैं -

"जलती सी उस विरह में बनी आरती आप।"

साकेत में उर्मिला के विरह का चित्रण गुप्त जी ने किया है वह अत्यधिक मार्मिक वह गहरी मानवीय संवेदनाओं और भावनाओं से ओत-प्रोत है ।साकेत राम-कथा पर आधारित है किंतु उसके केंद्र में लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला है। साकेत में कवि ने उर्मिला और लक्ष्मण के दांपत्य जीवन के हृदय स्पर्शी प्रसंग तथा उसकी विरह दशा का अत्यंत मार्मिक चित्रण किया है । लक्ष्मण के वन चले जाने पर उर्मिला उसके विरह में उन्मत्त हो जाती है। समस्त ऋतुओं में उर्मिला की विरह पीड़ा हृदय विधायक सिद्ध होती है। ऐसी तेजस्विनी , पतिव्रता स्त्री कम ही कवियों को दिखाई दी।ऐसा पात्र उर्मिला जो पति की सेवा में दूर रहकर भी तत्पर है वह प्रकृति से कहती है-

" शिशिर ना फिर गिरिवन में "स्वाबलंबी बन कहती है- "औरों के हाथों यहां नहीं पलती हूं "

साकेत द्वादश सर्गीय महाकाव्य है जिसमें मूलतः राम कथा का वर्णन करते हुए भी विरहिणी उर्मिला विषयक प्रकरण को विशेष महत्व देने तथा उसके चरित्र को उभारने का प्रयास किया गया है ।कभी कहती हैं "मुझे फूल मत मारो ।"

टैगोर जी का लेख काव्येतर उपेक्षितानामक लेख का परिणाम था कि द्विवेदी जी ने लेख लिखा और गुप्त जी ने काव्य के माध्यम से उर्मिला को जीवंत बनाया । वह आदर्श गृहणी के रूप में उभर कर सामने आई वह पति के मार्ग की बाधक नहीं बनी ।तभी तो वह कहती है कि जिस उद्देश्य को आप गए हैं वह पूर्ण कीजिए मेरी चिंता छोड़ दीजिए।

डॉ. शुभ्रा माहेश्वरी
Received Date: 06.10.2023
Publication Date: 30.10.2023

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.03, October, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

"एक अनोखी मैं ही दुबली हो गई सखी घर में।"

साकेत की उर्मिला को गुप्त जी ने जीवंत रखा और सम्मान की अधिकारी बनाया वैसे ही आज के कवि का भी दायित्व बनता है कि वह इस पात्र को उभार कर इसकी विशेषताओं को जन-जन तक पहुंचाये और हम कह सकें कि उर्मिला तो महान थीं ,महान हो और महान रहोगी।

साकेत एक द्वादश स्वर्गीय महाकाव्य है, जिसमें मूलत: राम कथा का वर्णन करते हुए भी विरहिनी उर्मिला विषयक प्रकरण का विशेष महत्व देने तथा उसके चरित्र को गौरावांवित करने का प्रयास किया गया है।इस कारण बारह सर्गों में निरूपित कथा के प्ररिप्रेक्ष्य में यदि देखा जाए तो प्रथम सर्ग में राम के अवतार लेने के कारण अयोध्या नगरी के वैभव का वर्णन और लक्ष्मण और उर्मिला के दांपत्य जीवन का सुखद एवं हास-परिहास पूर्ण चित्रण है। द्वितीय सर्ग में मंथरा कैकेयी -संवाद ,राजा दशरथ द्वारा कैकेयी को दिए गए वरदानों की पूर्ति , राजा दशरथ की पुत्र -विछोह से उत्पन्न अधीरता वर्णित है। तृतीय सर्ग में राम को कैकेयी तथा राजा दशरथ द्वारा वन गमन की सूचना मिलती है।लक्ष्मण को बहुत क्रोध आता है जिसे राम शांत करते हैं।लक्ष्मण भी राम के साथ 14 वर्ष तक वन में रहने का संकल्प लेते हैं।चतुर्थ सर्ग में राम लक्ष्मण अपनी माता कौशल्या, सुमित्रा को अपने पिता महाराज दशरथ का आदेश सुनाते हैं।कौशल्या विचलित हो उठती हैं। सुमित्रा के समझाने परवह धैर्य धारण करती हैं।मंत्री सुमंत राम को वन -गमन से रोकने का प्रयत्न करते हैं ,परंतु राम नहीं रुकते। सीता राम के साथ वनवास के लिए तैयार हो जाती हैं ,पर उर्मिला किसी प्रकार अपने मन को समझा लेती हैं और अंत में वल्कल धारण करके राम सीता का 14 वर्ष के वनवास के लिए प्रस्थान करते हैं। पंचम सर्ग में वनवास से पूर्व राम का राजगुरु वशिष्ठ के दर्शन करना राजरथ पर बैठकर अयोध्या की सीमा को पार करना ,निषाद राज द्वारा स्वागत पाना , भारद्वाज ऋषि के आश्रम में आना, महर्षि वाल्मीकि के दर्शनार्थ चित्रकूट प्रस्थान और वहीं कुटी बनाकर रहना आदि घटनाएं वर्णित है।षष्ठम सर्ग में राम, सीता व लक्ष्मण के वन गमन के पश्चात राज भवन के अंत पुरवासियों का दशरथ, कौशल्या ,सुमित्रा, उर्मिला आदि की दशा का अत्यंत मार्मिक वर्णन किया गया है। सप्तम सर्ग में भरत व शत्रुघ्न का अयोध्या लौटना ,अपनी मां के दुष्कृत्य पर ग्लानी प्रकट करना, कौशल्या का भरत को समझाना और राजा दशरथ की अंत्येष्टि क्रिया का वर्णन है।अष्टम सर्ग में राम के चित्रकूट जीवन ,भरत के साथ अयोध्या वासियों को राम को मनाने जाना व सफल होना, सभा का आयोजन होना कैकेयी का पश्चाताप होना, लक्ष्मण और उर्मिला मिलन और अंत में भरत का राम की पादुका लेकर लौटना आदि घटनाओं का वर्णन है। यह साकेत का सबसे महत्वपूर्ण सर्ग है इसमें उर्मिला के बिरह जीवन का अत्यंत मार्मिक एवं हृदयग्राही वर्णन किया गया है। दशम सर्ग में राम ,लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न चारों भाइयों तथा सीता और उर्मिला, मांडवी श्रुतिकीर्ति चारों बहनों के बचपन, धनुष यज्ञ, जनक -वाटिका में राम- सीता और लक्ष्मण -उर्मिला के मिलन ,राम के धनुष तोड़ने परशुराम के दंभ को खंडित करने और विरह विदग्धा उर्मिला के विलाप आदि तथ्य वर्णित है।एकादश सर्ग में भरत के त्यागमय जीवन के वर्णन के साथ-साथ शत्रुघ्न द्वारा सुनाई गई इन घटनाओं का वर्णन किया गया है - राम का चित्रकूट से प्रस्थान , दंडक वन में विराध वध, अगस्त्य ऋषि से दिव्यास्त्र की प्राप्ति ,शूपर्णखा के नाक कान काटना, खर और दूषण आदि राक्षसों का वध आदि का वर्णन किया गया है। द्वादश सर्ग में राम और रावण के युद्ध ,लक्ष्मण के मूर्छित होने की घटना को सुनकर अयोध्यावासियों का सेना लेकर राम की मदद के लिए प्रस्थान करने को तैयार होने, गुरु वशिष्ठ द्वारा अपने योग बल से राम और रावण की वास्तविक दशा दिखाकर उन्हें शांत करने, लक्ष्मण की मूर्छा के दूर होने, मेघनाथ व रावण वध राम के अयोध्या लौटने और उर्मिला के पुनर्मिलन आदि घटनाओं का वर्णन किया गया है। इस प्रकार साकेत महाकाव्य में मैथिली शरण गुप्त ने उर्मिला के चरित्र को बहुत अच्छी तरह से उभारा है।

डॉ. शुभ्रा माहेश्वरी
Received Date: 06.10.2023
Publication Date: 30.10.2023

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.03, October, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

अपनी सहज ,सहृदयता के कारण की उर्मिला अपनी सखियों के माध्यम से अयोध्या की सभी विरहिणी नारियों को अपने समीप बुला लेती है ।जिससे उनके भी हो दुख में आश्वासन दे सकें।

पोषित पतिकाएं हों जितनी भी,

सखि उन्हें निमंत्रण देना ।

सम दुखनी मिले जो दुख मिटें।

जा प्रणाम पुरस्कार लेआ।

इस प्रकार साकेत के नवम स्वर्ग में उर्मिला के चरित्र को विभिन्न रूपों में वर्णित किया है उर्मिला को गुप्त जी ने अत्यधिक रूपवती चित्रित किया है ।उन्होंने उसके प्रथम परिचय में ही उर्मिला के रूप का उद्घाटन करते हुए भाव व्यक्त किया कि राजभवन के आंगन में लाल वस्त्र पहने वह ऐसी प्रतीत होती है जैसे साकार उषा ही प्रकट हो गई हो ।उसकी कांति की किरणें सारे राज भवन में विकीर्ण होकर उसे प्रकाशित कर रही है। दूसरा रूप उन्होंने संयोगिनी रूप लिया है यद्यपि उर्मिला के प्रत्यक्ष व वास्तविक संयोगिनी अर्थात स्व-पति के साथ रहने के मधुर क्षणों का चित्रण नहीं किया है। तथापि उन्होंने उर्मिला के प्रत्ययावलोकन के माध्यम से इस तथ्य का भी पर्याप्त मात्रा में चित्रण किया है, कि लक्ष्मण के वन को जाने से पूर्व उसका दांपत्य जीवन कितना मधुर रहा।

इसके साथ ही वियोगिनी रूप में भी उर्मिला के चरित्र के विविध पक्षों का उद्घाटन करने में गुप्त की पूर्णता सफल हुए किंतु नवम सर्ग में उर्मिला का चरित्र एक सामान्य वियोगिनी के रूप में किया है ।उसके पति उसे छोड़कर 14 वर्षों के लिए वन में चले गए हैं और विरह में स्वयं आरती के समान जल रहे हैं। बिना वेदना के कारण उन्हें कोई भी भोग लुभा नहीं पाता । अपने प्रियतम में वह इतनी लीन हो जाती है कि अपनी ही सुध बिसरा चुकी है ।अपने विरह दुख को कम करने के लिए वह कभी चित्र बनाती है ,कभी पुस्तक पढ़ती है ,कभी वीणा बजाती है और किंतु फिर भी उसकी विरहाग्नि कम नहीं होती, उसने खाना पीना छोड़ दिया है उसके जीभ का स्वाद भी समाप्त हो गया है ।उसे यह सोचकर और भी कष्ट पहुंचता है कि न तो वह सीता की भांति अपने प्रियतम के साथ वन जा सकी है और न ही मांडवी और श्रुतिकीर्ति की भांति राज भवन के सुखों का उपयोग कर पाई है। अपने प्रियतम से चित्रकूट में मिलकर वह इतनी भावाकुल बन जाती है कि एक शब्द भी नहीं कह पाती उसकी दशा देखकर लक्ष्मण भी कुछ नहीं कह पाए थे । इसका उसको बहुत अधिक दुख है।

उर्मिला का आदर्श गृहणी का रूप भी देखने को मिलता है। गृहणी के रूप में मधुर झांकी प्रस्तुत की गई हैं ।विरह दशा से पीड़ित उर्मिला को खाना पीना अच्छा तो नहीं लगता है परंतु वह खाना बनाती है और अपने प्रियतम का इंतजार करती है। एक आदर्श गृहणी की तरह वह अपने पति को यह आश्वासन देना चाहती है कि आप जिस उद्देश्य गए थे ,वह कार्य करें और मेरी चिंता छोड़कर अपनी साधना में लीन रहें।

उर्मिला का अत्यधिक सहृदय रूप भी गुप्त जी ने चित्रित किया है।वह अपने सामान्य जीवन में भी सहृदयता पूर्ण व्यवहार करती रही ।वह राजभवन के पिंजरे में कैद उन पक्षियों को उड़ा देने की अभिलाषा व्यक्त करती है ,जो राज भवन में वर्षों से कैद रह रहे हैं और वह सोचकर द्रवित होती है कि बेचारे यह पक्षी अपने परिजनों से बिछड़ गए हैं। तो इस तरह से उर्मिला का चरित्र पूरी तरह से साकेत में उभारने का प्रयास किया है मैथिली शरण गुप्त जी ने जो किअन्य कवि इतनी सरलता से यह कार्य नहीं कर पाए। उर्मिला पर कवियों का ध्यान तो नहीं गया पर

Received Date: 06.10.2023
Publication Date: 30.10.2023

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.03, October, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

मैथिलीशरण गुप्त ने उर्मिला को उचित स्थान दिलाते हुए सबका ध्यान भी उसकी ओर आकृष्ट करते हुए साकेत को एक स्मृति पूर्ण कृति बना दिया। साथ ही साकेत के नवम सर्ग की उत्कृष्टता देखने योग्य है।

संदर्भ - 1-साकेत ,नवम सर्ग - मैथिलीशरण गुप्त
2- समाचार पत्र

डॉ. शुभ्रा माहेश्वरी
Received Date: 06.10.2023
Publication Date: 30.10.2023